उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005
Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांक: 1106 एनआरएम / डब्लूबीएसएलएएजी / पीएल / 2021 दिनॉक: 28.11.2024

दिनांक : 28 नवम्बर, 2024
समय : 12:00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति : संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024-25 की उन्नीसवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉं

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024-25 की उन्नीसवीं बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 28 नवम्बर, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के व्हीट ब्रीडर एवं मौसम वैज्ञानिक तथा पादप रोग वैज्ञानिक; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ;आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ; उद्यान विभाग; गन्ना विभाग; उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, लखनऊ;तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी, शुआट्स, प्रयागराज के वैज्ञानिकों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (28 नवम्बर से 05 दिसम्बर, 2024)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह (28 नवम्बर से 05 दिसम्बर, 2024) के दौरान प्रदेश में आसमान मुख्यतया साफ तथा मौसम शुष्क रहने की संभावना है। इस दौरान प्रदेश के उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तर भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भांभर-तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस; भांभर-तराई क्षेत्र के शेष भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा बुंदेलखण्ड के दक्षिणी भाग दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 24 से 26 डिग्री सेल्सियस; जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 26 से 28 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

इस दौरान प्रदेश के उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भांभर-तराई एवं मध्य-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग; पश्चिमी मैदानी, दक्षिणी पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी, बुंदेलखण्ड एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस; जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 10 से 12 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

आगामी द्वितीय सप्ताह के मौसम का दृष्टिकोण (06 से 12 दिसम्बर, 2024)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह (06 से 12 दिसम्बर, 2024) के दौरान प्रदेश के भांभर-तराई क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से कम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भांभर-तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस; भांभर-तराई क्षेत्र के शेष भाग, पश्चिमी मैदानी मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में 24 से 27 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

प्रदेश के समस्त कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भांभर-तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 6 से 8 डिग्री सेल्सियस; उत्तर पूर्वी मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 10 से 12 डिग्री सेल्सियस जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 8 से 10 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

कृषि विभाग, उ.प्र. द्वारा दिनांक 28 नवम्बर, 2024 तक उपलब्ध कराये गये आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में कुल रबी की बुवाई का लक्ष्य 135.87 लाख हे. के सापेक्ष कुल रबी फसलों की बुवाई 79.77 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 58.71 प्रतिशत है गेहूँ के आच्छादन लक्ष्य 101.12 लाख हे. के सापेक्ष 48.06 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 47.53 प्रतिशत है। जौ के आच्छादन लक्ष्य 1.74 लाख हे. के सापेक्ष 1.37 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 78.64 प्रतिशत है। मक्का के आच्छादन लक्ष्य 0.58 लाख के सापेक्ष 0.23 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 40.52 प्रतिशत है। चना के लक्ष्य 7.28 लाख हे. के सापेक्ष 6.46 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 88.80 प्रतिशत है। मटर के लक्ष्य 5.02 लाख हे. के सापेक्ष 4.54 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 90.38 प्रतिशत है। मसूर के लक्ष्य 5.98 लाख हे. के सापेक्ष 5.23 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 87.50 प्रतिशत है। तिलहनी फसलों में तोरिया की बुवाई लक्ष्य 4.67 लाख हे. के सापेक्ष 4.68 लाख हे. में बुवाई हुई है जो लक्ष्य का 100.13 प्रतिशत है जबकि राई-सरसों के 13.47 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 13.22 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 98.11 प्रतिशत है। अलसी के 0.68 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 0.66 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 97.02 प्रतिशत है।

मौसम के परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- मौसम के दृष्टिगत सिंचित दशा में गेहूँ की बुवाई के लिए तापक्रम अनुकूल है अतः युद्धस्तर पर बुवाई करें।
- विलम्ब से गेहूं की बुवाई के समय उर्वरक सही गहराई में डालने तथा कम व्यय में कतार में बुवाई के लिये जीरोटिल फर्टीड्रिल का प्रयोग करें।
- आलू की फसल में झुलसा बीमारी की रोकथाम हेतु मैंकोजेब/प्रोपीनेब/कार्बेन्डाजिम फफूदनाशक 2.0 से 2.5 कि.ग्रा. 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। जिन खेतों में बीमारी का प्रकोप हो चुका है उनमें किसी भी फफूदनाशक साईमोक्सेनिल+मैंकोजेब अथवा मेटालेक्जिल + मैंकोजेब का 2.0 से 2.5 प्रति हे. (1000 लीटर पानी) की दर से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- भारत सरकार द्वारा नवीनतम AI/ML तकनीक का उपयोग करते हुये लक्षित कीटों/फसल संयोजनों के लिये जी.आई.एस. आधारित नेशनल पेस्ट सर्विलांस सिस्टम (NPSS) मोबाईल ऐप विकसित किया गया है इस ऐप को गूगल प्ले स्टोर/आई.ओ.एस. प्ले स्टोर में NPSS टाइप कर डाऊनलोड किया जा सकता है। इस ऐप द्वारा महामारी के प्रसार, कीट/रोग की पहचान, कीट हॉट स्पॉट की पहचान आदि के बारे में जानकारी ली जा सकती है जिससे किसानों को कीट रोग प्रबंधन, आर्थिक क्षति स्तर आधारित निर्णय लेने के लिये समय पर विशेषज्ञ सलाह मिल सकेगी।

गेहूँ की खेती

- गेहूँ में बुवाई के 20-25 दिन बाद (ताजमूल अवस्था में) हल्की सिंचाई अवश्य करें। विशेष रूप से ऊसर भूमि में पहली सिंचाई 25-30 दिन बाद हल्की ही करें।
- दिसम्बर में गेहूँ की बुवाई करने पर गेहूँ की पैदावार 3 से 4 कु./हे. कम होती है। गेहूँ की बुवाई सीड ड्रिल/हैपी सीडर से करने पर उर्वरकों एवं बीज की बचत की जा सकती है।
- प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र के लिये संस्तुत किस्मों जैसे के.-1616, के.-1317, डी.एल.-803-3, राज-1555, एच.आई.-8381, एच.आई.-8498, के.-9107, डब्लू.एच.-147, जी.डब्लू.-273, जी. डब्लू.-322, एच.डी.-3237, एच.डी.-3365 की बुवाई करें।
- गेहूँ की विलंब से बोई जाने वाली संस्तुत किस्मों यथा के.-9423 (उन्नत हलना), के.-7903 (हलना), एच.आई.1563, डी.बी.डब्लू.-107, एच.डी.-3118, एच.आई.1621, पी.बी.डब्लू.-833, पी.बी.डब्लू. -771 एवं एच.डी.-3059 आदि के बीज की बुवाई 15 दिसम्बर तक करें।
- बदलते जलवायु परिवेश में सिंचित दशा में बोई जाने वाली ताप सहिष्णु संस्तुत किस्मों के.-0307 (शताब्दी), डी.बी.डब्लू.-187, एच.डी.-3293, डी.बी.डब्लू.-90 (ई) एवं डब्लू.-1105 की बुवाई करें।
- चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार के नियंत्रण के लिये 2-4डी, सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत की 625 ग्राम प्रति हे. अथवा 2-4डी मिथाइल एमाइन साल्ट 58 प्रतिशत एस.एल. की 1.25 लीटर प्रति हे. की मात्रा को लगभग 500 से 600 पानी में घोल बनाकर बुवाई के 30 से 35 दिन बाद छिड़काव करना चाहिये।
- गेहूँसा एवं जंगली जई आदि संकरी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिये खरपतवारनाशी सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत डब्लू.जी. की 33 ग्राम (2.5 यूनिट) को 300 लीटर पानी में घोल बनाकर अथवा आइसोप्रोट्यूरॉन 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 1.25 किलोग्राम प्रति हे. 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 30-35 दिन बाद छिड़काव करें।

रबी मक्का की खेती

- रबी मक्का की बुवाई के 20 से 25 व 40 से 45 दिन बाद निराई गुड़ाई करें अथवा एट्राजीन 50 प्रतिशत डब्लू.पी. 1 से 1.5 कि.ग्रा. मात्रा 500 से 600 ली. पानी में घोलकर बुवाई के बाद तथा जमाव से पहले छिड़काव करें।
- रबी मक्का की बुवाई के 25 से 30 दिन उपरांत प्रथम सिंचाई करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- सरसों की फसल में दो निराई-गुड़ाई 25-30 एवं 40-45 दिनों बाद कर लेने से अधिक पैदावार प्राप्त होती है।
- सरसों में आवश्यकता से अधिक घने पौधों की छटाई/विरलीकरण बुवाई के 15-20 दिन बाद या प्रथम सिंचाई से पूर्व कर पौधों से पौधों की दूरी 10-15 से.मी. कर देनी चाहिये।

दलहनी फसलों की खेती

- चना की विलम्ब से बुवाई दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक अवश्य कर दें।
- चने की देर से बुवाई हेतु काबुली चना की संस्तुत किस्मों यथा फूले विक्रम (जी-08108), जी.एल.के. -28127, जी.एन.जी.-1969 (के.) तथा देशी चना की संस्तुत किस्में यथा आई.पी.सी.-2005-62, आई.पी.सी.-2006-77, जी.एन.जी.-2207 (अवध) की बुवाई यथाशीघ्र सम्पन्न करें।
- चना, मटर और मसूर की समय से बोई गई फसलों से खरपतवार निकाई-गुड़ाई द्वारा नियंत्रित करते रहें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

गन्ना की खेती

- शरदकालीन गन्ने के साथ अंतःफसली खेती की समय समय पर निराई-गुड़ाई एवं सिंचाई अवश्य करें।
- शरदकालीन गन्ने के जमाव के पश्चात् आवश्यकतानुसार सिंचाई कर दें।
- चीनी मिलों में गन्ना आपूर्ति करते समय गन्ने की कटाई जमीन की सतह से करें।
- गन्ने की कटाई तभी करें जब सप्लाई टिकट का एस.एम.एस. आपके मोबाईल पर आ जाय।
- स्वच्छ एवं ताजे गन्ने की सप्लाई करें, जिससे आपको गन्ने का सही वजन प्राप्त हो।
- लालसड़न रोग से प्रभावित खेत में गन्ने की कटाई के पश्चात् किसी अन्य फसल की बुवाई करें।

सब्जियों की खेती

- कीट प्रबंधन के लिये गोभीवर्गीय फसलों में फूल बनने की अवस्था के समय नीम सीड कर्नल एक्सट्रैक्ट 5 मि.ली./10 लीटर पानी में मिलाकर 10 से 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।
- फूलगोभी तथा पत्तागोभी में डायमंड ब्लैक मॉथ का प्रकोप होने पर क्लोरेन्टरानिलिप्रोल 0.5 से 1.0 मि.ली. रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- उचित मृदा नमी की स्थिति में टमाटर की फसल में निराई गुड़ाई एवं मिट्टी चढ़ाने का कार्य व पौधें की स्टेकिंग करें। फसल को झुलसा रोग से बचाने के लिये 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम/लीटर) की दर से मैंकोजेब का छिड़काव करें।
- फसल को कीटों से बचाव हेतु ब्यूवेरिया वेसियाना (फफूंद) 3 से 5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- यदि लहसुन की बुवाई अब तक नहीं हो पाई है तो अवश्य पूर्ण कर लें। पूर्व में बोई गई लहसुन की फसल की निराई गुड़ाई एवं सिंचाई करें।
- मिर्च/टमाटर में सफेद मक्खी से बचाव हेतु डाईमेथोएट 1 मि.ली./लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- बैंगन की फसल में प्ररोह एवं फलछेदक कीट की रोकथाम के लिये ब्यूवेरिया वेसियाना (फफूंद) 3 से 5 ग्राम या फ्लूबेन्डामाइड से 0.5 से 0.75 मि.ली. रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बागवानी की खेती

- आम में गुजिया कीट को पौधों पर चढ़ने से रोकने के लिए दिसम्बर माह में भूमि से लगभग 40 से. मी. ऊपर पेड़ के तने के चारों तरफ मिट्टी की पतली परत चढ़ाकर 400 गेज की मोटी सफेद पालीथीन की 25 से.मी. चौड़ी पट्टी लपेट कर सुतली से बांध दें। यदि गुजिया कीट की संख्या अधिक हो तो प्रत्येक पेड़ में क्लोरपाइरीफॉस (1.5 प्रतिशत) 250 ग्रा. की दर से तने के चारों ओर गुड़ाई करके मिट्टी में मिलाने से गुजिया कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।
- आम में शूट गाल मेकर एवं टेंट कैटरपिलर (जाला कीट) से प्रभावित शाखाओं की छंटाई पर नष्ट कर दें तथा नियंत्रण हेतु लैम्बडासाइहलोथ्रिन 1.5 से 2 मि.ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आम में यदि शाखाओं में डाईबैक रोग/गोद निकलने की समस्या हो तो पौधों की जड़ों के पास 200 से 400 ग्राम कॉपर सल्फेट प्रति वृक्ष की दर से प्रयोग करें तथा थायोफिनेट मिथाइल 1 मि.ली. रसायन प्रति लीटर पानी में घोलकर पर्णीय छिड़काव करें।
- केले में 50 से 60 ग्राम यूरिया तथा 100 से 125 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति पौधे की दर से प्रयोग करें तथा 10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें।

- अमरूद में छाल खाले वाली इल्ली की रोकथाम के लिये सबसे पहले पतले तार या साईकिल की तीली से सुराखों की सफाई करें, नियंत्रण हेतु डाईक्लोरोवॉस रूई में भिगोकर सुराखों में भरकर गीली मिट्टी का लेप लगायें।

मशरूम की खेती

- मशरूम की खेती में कई प्रकार के कीट एवं बीमारियां लगती है, इनमें से प्रमुख कवक एवं जीवाणु जनित बीमारियों के लक्षण बैग की सतह पर भूरे, हरे और पीले धब्बों के रूप में दिखाई देते है। इसके प्रबंधन के लिये 2 एम.एल. फॉर्मेलिन को 1 लीटर पानी के साथ घोल बनाकर, रूई को घोल में भिगोकर प्रभावित स्थानों पर लगायें।
- मशरूम की खेती के कक्ष में आर्द्रता 85 प्रतिशत एवं तापमान 18 से 20 डिग्री से. तक रखें।
- मशरूम उत्पादन हेतु कृषक जिला उद्यान अधिकारी, अधीक्षक राजकीय उद्यान, राजकीय मशरूम प्रशिक्षण केन्द्र, अलीगंज, लखनऊ, औद्यानिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केन्द्र, बस्ती एवं कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि विश्वविद्यालयों से सम्पर्क कर सकते हैं।

पशुपालन

- खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) का टीकाकरण पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 15 जनपदों में 4 दिसम्बर तक निशुल्क चलाया जा रहा है।
- वर्तमान मौसम में ब्याने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखें।
- पशुओं को हरा चारा अवश्य खिलायें।
- विभागीय प्रक्षेत्रों पर जई तथा बरसीम का बीज निर्धारित मूल्य पर उपलब्ध है अतः पशुपालक/कृषकों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।
- अतिरिक्त चारा विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत रबी मौसम में प्रदेश के समस्त जनपदों में पशुपालकों/कृषकों को बरसीम प्रमाणित चारा बीज मिनी किट निशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है।
- पं.दीन दयाल उपाध्याय मेले का आयोजन मण्डल/जिला एवं विकास खण्ड के ग्रामों में आयोजित किया जा रहा है जिसमें निशुल्क चिकित्सा, दवापान एवं गोष्ठियों का भी आयोजन किया जा रहा है।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं.-1962 पर सम्पर्क पर योजना का लाभ ले सकते हैं।

मत्स्य पालन

- तालाब का पानी ज्यादा हरा होने पर चूना एवं रासायनिक खाद का प्रयोग बंद कर दें एवं 800 ग्रा. कॉपर सल्फेट का प्रयोग पानी में घोलकर करें।
- तालाब में मछलियों के लिये पूरक आहार का प्रयोग मछलियों के शरीर के भार के 1.8 प्रतिशत से ज्यादा नहीं करें।
- तालाब में मृदा की गुणवत्ता बनाये रखने के लिये 400 ग्राम प्रति एकड़ की दर से मृदा प्रोबायोटिक्स का प्रयोग करें।
- मछलियों को संक्रमण से बचाने के लिये प्रति एकड़ 400 ग्रा. पोटेशियम परमैगनेट या 500 मि.ली. ग्राम प्रति एकड़ कर दर से वॉटर सेनेटाईजर का प्रयोग करें।
- तालाब में पानी ज्यादा हरा होने पर चूना एवं रासायनिक खाद का प्रयोग बंद कर दें एवं 800 ग्राम कॉपर सल्फेट का प्रयोग पानी में घोलकर करें।
- पंगेशियस मछली छोटी है (बिक्री योग्य नहीं है) तो ठंड से बचाने के लिये तालाब के पानी की गहराई 8 से 10 फीट रखना चाहिये। पूरे ठंड के मौसम तक रात्रि तक बोरिंग का पानी तालाब के मध्य में

तलहटी में डालना चाहिये एवं 8 फीट पानी का स्तर होने के बाद ऊपर से एक निकासी का पाइप लगा देना चाहिये।

रेशम पालन

- दिसम्बर माह के प्रथम सप्ताह में शहतूत वृक्षारोपण की प्रुनिंग एवं ट्रीमिंग का कार्य प्रारंभ कराते हुये शहतूत बागानों में से खरपतवार एवं घास आदि की सफाई समय से करा ली जाय तदोपरांत अन्य कर्षण-कार्य प्रारंभ कर दिया जाय।

आपदा प्रबंधन

- गर्मी उत्पन्न करने के लिये घर के अन्दर कोयला न जलायें बंद स्थान खतरनाक हो सकते हैं क्योंकि इससे कार्बन मोनोआक्साइड गैस उत्पन्न हो सकती है जो बहुत जहरीली होती है और कमरे में मौजूद लोगों की जान जा सकती है।
- फ्रास्टबाइट/हाइपोथर्मिया से पीड़ित कोई व्यक्ति शरीर के तापमान में कमी के कारण कपकंपी, बोलने में कठिनाई, नींद न आना, मांसपेशियों में अकड़न, भारी श्वास, कमजोरी और चेतना का नुकसान हो सकता है। हाइपोथर्मिया एक आपातकालीन चिकित्सा है जिसके लिए तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता होती है।
- जलवायु अनुकूल शेड का निर्माण जो सर्दियों के दौरान अधिकतम सूर्य प्रकाश तथा गर्मियों के दौरान कम विकिरण की अनुमति देता है।
- सर्दियों के दौरान पशुओं के नीचे सूखा भूसा जैसी कुछ बिछावन सामग्री डालें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 12 दिसम्बर, 2024 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट **upcar.up.gov.in** पर भी उपलब्ध हैं।

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट **www.kisanmitraup.ai** पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हो तो परिषद के ईमेल **upcar12@gmail.com** पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(संजय सिंह)
महानिदेशक 29/11/24

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।

5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।

41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
43. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
44. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
45. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
46. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
47. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
48. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

29-11-24

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2024-25 की उन्नीसवीं बैठक दिनांक 28 नवम्बर, 2024 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
2. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ।
3. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
4. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
5. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश
6. डा. समीर कुमार विश्वास, प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
7. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
8. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
9. डा. जय पाल, वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
10. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ ।
11. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आवजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
12. डा. अंशुमान सिंह, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
13. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल आफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना नैनी एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट, शुआट्स, प्रयागराज (ऑनलाइन)।
14. श्री नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
15. श्रीमती प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ।
16. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।